CHAPTER 11

भक्तिन

PAGE 81, अभ्यास - पाठ के साथ

12:1:11:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ: 1

भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी ? भक्तिन को यह नाम किसने और क्यों दिया होगा?

उत्तर: भक्तिन का असली नाम लछमिन था जिसका अर्थ लक्ष्मी है जो समृद्धि और संपन्नता का प्रतीक माना जाता है। लेकिन यहां नाम के साथ उसके गुणों का कोई मेल नहीं था। लछमिन बहुत गरीब है लेकिन उतना ही बुद्धिमान है। उसे इस बात का ज्ञान है की उसके नाम तथा परिस्थिति के बीच का विरोधभास उसे समाज में बस उपहास का पात्र बनता है। समाज से उसे उपहास के अतिरिक्त और कुछ प्राप्त नहीं होगा। इसलिए वह लोगों से अपना असली नाम छिपाती थी। जब लेखिका महादेवी वर्मा ने लछमिन को देखा तो उसके गले में कंठी माला तथा उसका मुंडा हुआ सर दिखाई दिया।

इसीलिए महादेवी वर्मा को वह कोई भक्तिन लगी। लेखिका ने उसे “भक्तिन”नाम उसकी सेवा-भावना और कर्तव्य-परायणता को देखकर ही दिया था।

12:1:11:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ :2

दो कन्या -रत्न पैदा करने पर भक्ति पुत्र -महिमा में अँधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी। ऐसी घटनाओं से ही अकसर यह धारणा चली है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। क्या इससे आप सहमत हैं?

उत्तर: यह कथन बिल्कुल सत्य है कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन है। भक्तिन के ही जीवन को देखे तो पता चलता है की उसे सबसे ज्यादा ताने स्त्रियों से ही मिला है। स्त्रियों के द्वारा ही उसका सबसे ज्यादा शोषण हुआ है। भक्तिन की दो पुत्रियां थी कोई पुत्र नहीं था। इसलिए उसे अपने जठानियों तथा सास से सबसे उपेक्षा तथा ताने मिले। उसकी जेठानियों ने पुत्रों को जन्म दिया था इस लिए वे दिन भर आराम फरमाती थी जबकि भक्तिन और उसकी बेटियों दिन भर घर तथा खेत का काम करना पड़ता था। यहां पर जिसका शोषण हो रहा है वो महिला है तथा जो शोषण कर रहा है वो भी महिला ही है।

इसीलिए कहा जाता है की स्त्री ही स्त्री की सबसे बड़ी दुश्मन होती है।

12:1:11:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ :3

भक्तिन की बेटी पर पंचायात द्वारा ज़बरन पति थोपा जाना दुर्घटना भर नहीं, बल्कि विवाह के संदर्भ में स्त्री के मानवाधिकार (विवाह करें या न करें अथवा किससे करें) इसकी स्वतंत्रता को कुचले रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। कैसे?

उत्तर: भक्तिन के जेठ के साले ने उसकी विधवा बेटी के साथ दुष्कर्म करने की कोशिश की। भक्तिन की विधवा बेटी ने अपने बचाव में उस व्यक्ति की पिटाई कर दी। भक्तिन के जेठ ने संपत्ति के लालच में भक्तिन की बेटी को फंसाया। इसके बाद पंचायत ने भक्तिन की विधवा बेटी की कोई भी बात सुने बिना उसका विवाह उसी व्यक्ति के साथ कर देने का फैसला सुनाया जिसने उसके साथ दुष्कर्म करने की कोशिश किया था। यह फैसला पूर्ण रूप से भक्तिन की विधवा बेटी के मानवाधिकारों का हनन है। इसी प्रकार के बहोत से उदहारण पूर्व के समय में है। जहाँ पर अयोग्य वर के साथ

गुणवती कन्या का विवाह करके कन्या का जीवन नरक बना दिया गया|

12:1:11:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ :4

भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं लेखिका ने ऐसा क्यों कहा होगा?

उत्तर: भक्ति में कर्तव्य-निष्ठा और भक्ति है परन्तु लेखिका उसे पूर्ण रूप से अच्छा नहीं कहती है। जिसके निम्नलिखित कारण है:

(क) लेखिका के इधर-उधर पड़े पैसे भक्तिन बिना पूछे भंडार-घर की मटकी में छुपाने की आदत है। भक्तिन इसे चोरी भी नहीं मानती है।

(ख) लेखिका के गुस्से से बचने के लिए वह झूट बोलती है।

(ग) उसे अपने बात को सिद्ध करने के लिए वह बेवजह तर्क-वितर्क करने की आदत है।

(घ) वह दुसरो को अपनी इच्छानुसार परिवर्तित करना चाहती है परन्तु खुद में परिवर्तन नहीं करना चाहती है।

(ङ) शास्त्रों में लिखी बातों का वह अपने अनुसार व्याख्या करती है।

12:1:11:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ :5

भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है?

उत्तर: भक्तिन का सर मुंडवाना महादेवी जी को पसंद नहीं था। वो भक्तिन को ऐसा करने से मना करती थी। परन्तु भक्तिन शस्त्रों में लिखी बात "तीरथ गए मुंडाए सिद्ध" का उदहारण देते हुए सर मुंडाने को सही मानती थी और हर हफ्ते मुंदती भी थी। यह बात किस शास्त्र में लिखी है उसे इस बात नहीं था। लेकिन लेखिका उसे फिर भी सर मुंडाने से रोक नहीं पाती है। क्योँकि भक्तिन तर्क करने में निपुण थी।

12:1:11:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के साथ :6

भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गईं?

उत्तर: महादेवी जी भक्तिन की आदतें तो नहीं बदल सकी अपितु भक्तिन ने महादेवी जी की आदतें बदल दी थी। भक्तिन भोजन में मीठा बनाना बंद कर दिया। वह गाढ़ी दाल, मोटी रोटी, मकई की लपसी, ज्वार के भुने हुए, भुट्टे के

हरे-हरे दाने की खिचड़ी, बाजरे के तिल वाले ठंढे पुए आदि बनाती। महादेवी जी को वही भोजन करना पड़ता था। धीरे-धीरे उनका स्वाद बदल गया और वह भक्तिन की तरह देहाती हो गयी।

PAGE 81, अभ्यास - पाठ के आसपास

12:1:11:प्रश्न - अभ्यास - पाठ के आसपास:1
आलो आँधारि की नायिका और लेखिका बेबी हालदार और भक्तिन के व्यक्तित्व में आप क्या समानता देखते हैं?

उत्तर: आलोआंधारि की ऐलांधारी की नायिका और भक्तिन के व्यक्तित्व में समानता है। दोनों घरेलू नौकरानियां हैं। दोनों को परिवार और समाज से उपेक्षा मिली और दोनों ने अपने आत्मसम्मान की रक्षा के लिए अपना जीवन बिताया।

12:1:11:प्रश्न - अभ्यास - पाठकेआसपास:2

भक्तिन की बेटी के मामले में जिस तरह का फ़ैसला पंचायत ने सुनाया, वह आज भी कोई हैरतअंगेज़ बात नहीं है। अखबारों या टी.वी. समाचारों में आनेवाली किसी ऐसी ही

घटना को भक्तिन के उस प्रसंग के साथ रखकर उस पर चर्चा करें।

उत्तर: भारत में आज भी शादी से जुड़े फैसले पंचायत में किए जाते हैं। कुछ स्थानों पर पंचायतें अभी भी रूढ़िवादी विचारों से प्रेरित हैं। यही कारण है कि आज पंचायतों के फैसले रूढ़िवादी विचारों से प्रेरित होते हैं।समाचारों, अखबारों, टेलीविज़न, रेडियो में पंचायतो के विचित्र फैसले आज भी सुने जाते हैं। जैसे -एक दंपति को भाई और बहन की तरह रहने के लिए मजबूर किया गया, शादी करने के बाद भी पति और पत्नी को अलग रहने की सजा दी गई इत्यादि।

PAGE 82, अभ्यास - भाषा की बात

12:1:11:प्रश्न - अभ्यास - भाषा की बात:1
नीचे दिए गए विशिष्ट भाषा-प्रयोगों के उदाहरणों को ध्यान से पढ़िए और इनकी अर्थ- छवि स्पष्ट कीजिए-
(क) पहली कन्या के दो संस्करण और कर डाले
(ख) खोटे सिक्कों की टकसाल जैसी पत्नी
(ग) अस्पष्ट पुनरावृत्तियाँ और स्पष्ट सहानुभूतिपूर्ण

उत्तर:

(क) पूर्व-प्रकाशित पुस्तक को पुनः प्रकाशित करना इसका नया संस्करण कहलाता है। इसमें कोई बदलाव या संशोधन नहीं है। भक्तिन ने एक लड़की के बाद फिर से दूसरी बेटी को जन्म दिया। इसलिए लेखिका ने "संस्करण" कहा है।

(ख) भक्तिन ने एक के बाद एक तीन पुत्रियों को जन्म दिया था इस लिए उसे टकसाल खाकर सम्बोधित किया गया। सिक्का टकसालो में बनाया जाया है चूँकि भक्तिन ने तीन बेटियों को जन्म दिया था इसलिए उसे कहते सिक्के की टकसाल खा गया।

(ग) भक्तिन को पता था कि उसके पिता बीमार है। परन्तु उसे अपने पिता की मृत्यु की सुचना नहीं थी। जब आज अपने पिता के गांव पहुंची तो लोग उसे देखकर फुसफुसाने लगे की बेचारी लक्ष्मीं अब आयी है। ये फुसफुसाहट बार बार दोहराई जा रही थी परन्तु स्पष्ट

नहीं थी। इस फुसफुसाहट को महादेवी जी ने अस्पष्ट पुनरावृत्ति कहा है। पिता की मृत्यु के कारन लोग उसे सहानभूति की दृष्टि से देख रहे थे तथा साहस देने का प्रयत्न्न कर रहे थे। ये सब स्पष्ट रूप से हो रहा था इस लिए महादेवी जी इसे स्पष्ट सहानभूति कहा।

12:1:11:प्रश्न - अभ्यास - भाषाकीबात:2

'बहनोई' शब्द 'बहन (स्त्री.)+ओई' से बना है। इस शब्द में हिंदी भाषा की एक अनन्य विशेषता प्रकट हुई है। पुंलिंग शब्दों में कुछ स्त्री-प्रत्यय जोड़ने से स्त्रीलिंग शब्द बनाने की एक समान प्रकिया कई भाषाओं में दिखती है, पर स्त्रीलिंग शब्द में कुछ पुं. प्रत्यय जोड़कर पुंलिंग शब्द बनाने की घटना प्रायः अन्य भाषाओं में दिखलाई नहीं पड़ती है। यहाँ पुं. प्रत्यय 'ओई' हिंदी की अपनी विशेषता है। ऐसे कुछ और शब्द उनमें लगे पुं. प्रत्ययों की हिंदी तथा और भाषाओं में खोज करें।

उत्तर: 'बहनोई' जैसा एक और शब्द है 'ननदोई': ननद+ओई

12:1:11:प्रश्न - अभ्यास - भाषाकीबात:3

पाठ में आए लोकभाषा के इन संवादों को समझ कर इन्हें

खड़ी बोली हिंदी में ढाल कर प्रस्तुत कीजिए।

(क) ई कउन बड़ी बात आय। रोटी बनाय जानित है, दाल राँध लेइत है, साग-भाजी छँउक सकित है, आउर बाकी का रहा।

(ख) हमारे मालकिन तौ रात-दिन कितबयिन माँ गड़ी रहती हैं। अब हमहूँ पढ़ै लागब तो घर-गिरिस्ती कउन देखी-सुनी।

(ग) ऊ बिचारअउ तौ रात-दिन काम माँ जुकी रहती हैं, अउर तुम पचै घमती-फिरती हौ, चलौ तनिक हाथ बटाय लेउ।

(घ) तब ऊ कुच्छौ करिहैं-धरिहैं ना-बस गली-गली गाउत-बजाउत फिरिहैं।

(ङ) तुम पचै का का बताईययहै पचास बरिस से संग रहित हैं।

(च) हम कुकुरी बिलारी न होयँ, हमार मन पुसाई तौ हम दूसरा के जाब नाहिं त तुम्हार पचै की छाती पै होरहा भूँजब और राज करब, समुझे रहौ।

उत्तर:

(क) यह कौन सी बड़ी बात है । रोटी बनाना जानती हूँ,दाल बना लेती हूँ,साग-भाजी छौंक सकती हूँ,और शेष क्या बचा है?

(ख) हमारी मालकिन तो रात-दिन किताबों में डूबी रहती हैं । हम भी पढ़ने-लिखने लगे तो घर-गृहस्थी कौन देखेगा-

सुनेगा।

(ग) वह बेचारी तो रात-दिन काम में लगी रहती है और तुमलोग घूमती-फिरती हो। चलो थोड़ा हाथ बंटा लो।

(घ) तब वह कुछ करता-धरता नहीं होगा,बस गली-गली में गाता-बजता फिरता होगा।

(ङ) तुम्हें हम क्या-क्या बताएं,यही पचास वर्ष से साथ रहती हूँ।

(च) हम कुतिया-बिल्ली नहीं हैं । हमारा मन चाहेगा तो हम दूसरे के यहाँ (पत्नी बनकर) जायेंगे नहीं तो तुम्हारी छाती पर ही हो रहा भुनूंगी और राज करुँगी-यह समझ लेना।